विचार बिन्दु

बुद्धिमान मनुष्य अपनी हानि पर कभी नहीं रोते बल्कि साहस के साथ उसकी क्षतिपूर्ति में लग जाते हैं। – विष्णु शर्मा

अरे ओ सांभा, कितने बागी हुये रे..... सरदार, लिस्ट अभी बाकी है

एक समाचार पत्र ने दिनांक 30.11.2023 के अंक में एक कार्टून दिया था और भारतीय सिनेमा की प्रसिद्ध पिक्चर के एक संवाद की ओर जनता का ध्यान, वर्तमान चुनाव की परिस्थितियों की ओर खींचा है। स्क्रीनिंग कमेटियों की मिटिंग्स हो रही हैं। चुनावों में खडे होने वाले उम्मीदवारों की लाइनें लगी हुई हैं। तयशुदा उम्मीदवारों की अधूरी लिस्ट बन चुकी हैं, घोषित भी कर दी गई हैं। पार्टियों के नेता और उनके सदस्यों की चालों को समझना कठिन हो रहा है। प्रात: तक तो एक पार्टी का प्रमुख सदस्य कांग्रेस अथवा भारतीय जनता पार्टी का सदस्य था और शाम को पता चलता है कि उसने अपनी पार्टी छोडकर दूसरी पार्टी जॉइन करली है और जनता तमाशा देख रही है कि वह व्यक्ति नई पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चुनाव भी लडने जा रहा है। बागी उम्मीदवार अधिकतर प्रभावशाली व्यक्ति रहे हैं। बागी उम्मीदवारों की संख्या बढ रही है और वे उनकी पार्टियों का ब्लड प्रेशर बढा रहे हैं।

विधान सभा के प्रदेश में चुनाव कार्यक्रम की सूचना जारी हो चुकी है। 9 नवम्बर 2023 तक नामांकन वापिस लेने की समय सीमा है। कौन चुनाव लडेगा और कौन बैठ जावेगा यह तो समय ही बतायेगा, किन्तु यह दिखाई दे रहा है कि चुनाव बहुत मंहगे हो जावेंगे। टिकटों पर करोड़ों का ब्लेक है, यह अफवा है, तो भी लोकतंत्र के चहरे पर काला दाग है।

इन दिनों आपको प्रतिदिन यह समाचार पढने को मिल रहे हैं कि प्रदेश में अवैध शराब और नशे की वस्तुयें जब्त हो रही हैं। कारों में करोड़ो रूपये मिल रहे हैं। देश में उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम इन्कम टैक्स, ईडी, सीबीआई आदि द्वारा रेड की जा रही है। अकूत धन मिल रहा है, ऐसा प्रतीत होता है मानो सारा देश ही गैर कानूनी कमाई में लगा हुआ है। मनी लोन्डरी के मामले उजागर हो रहे हैं। कहा जा रहा है छापो की कार्यवाही से विरोधी पक्ष बोखला गया है, उनका आरोप है कि संवैधानिक संस्थाओं का केन्द्र सरकार दुरूपयोग कर रही है। चुनावी माहौल में काला धन, रिश्वत की कमाई, के छापों की कार्यवाही को बडी गम्भीरता से देख रही है। वह समझ नहीं पा रही है कि क्या कोई व्यक्ति टयूशन की कमाई से 3.37 करोड रूपये कमा सकता है। प्रत्याशी बनने से पूर्व ही लोग गिरफ्तार हो रहे हैं। जुलूस आदि में सभा करने में अपार धन खर्च होता है। चुनाव आयोग उम्मीदवारों के चुनाव खर्चों पर निगाह लगाये हुये है। चुनाव आयोग ने उम्मीदवारों के ऊपर निगाह रखने के लिये 243 केन्द्रीय चुनाव पर्यवेक्षक नियुक्त किये हैं। चुनाव कानून में विधान सभा अथवा संसद की सीट के लिये चुनाव लडने में किस सीमा तक उम्मीदवार खर्चा कर सकता है, उसकी सीमा दी गई है वह वस्तु स्थिति के अनुसार कम है, खर्चे के प्रावधानों को आज की स्थिति के अनुसार संशोधित किये जाने की आवश्यकता है। यों भी डिजिटीलाइजेशन के बाद चुनाव कानून में संशोधन की परम आवश्यकता है।

केरल में प्रार्थन सभा के दौरान एक ईसाई कन्वेन्शन सेन्टर में बम के धमाके आतंकी घटना मानी जा रही है। चुनाव के दौरान ऐसी घटनायें होने की पूरी आशंका है। अत: सुरक्षा व्यवस्था को अधिक मजबूत बनाना होगा।

भारत विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र है किन्तु नेतृत्वहीन दिखाई देता है। जो एक बार मुख्यमंत्री की गद्दी पर बैठ गया वह व्यक्ति कुर्सी से चिपक जाना चाहता है। फलस्वरूप राज्यों में सही नेतृत्व नहीं है। पांच राज्यों में विधान सभा के चुनाव होने जा रहे हैं किन्तु चुनाव में कौन खडा होगा इसकी फाइनल लिस्ट नहीं बन पाई है। सभी पार्टियों को सबसे बडा खतरा अपनों से है।

चुनाव जीतने का मुख्य गुर है ओबीसी के आरक्षण की मांग। राज्य में ओबीसी के कई मंत्री हैं। महिलाओं की 33 प्रतिशत भागीदारी नारी वंदना अधिनियम, 2023 में सुरक्षित रखी गई है चुनाव में खडे होने वाले उम्मीदवारों की जांच की जावे तो ऐसा लगता है कि सत्ता में आने का रास्ता ओबीसी व महिलाओं के वोटों से ही बनेगा। कांग्रेस ने 6 प्रतिशत ओबीसी को अतिरिक्त आरक्षण देने का वायदा किया है।

चुनावों में मुफ्त में रेवडियां लुटाई जा रही हैं। सभी राजनैतिक पार्टियां इस खेल के मैदान में हैं। क्या राज्य का बजट इन खर्चों को वहन कर सकेगा? सोचने का प्रशन है। लोगों का कहना है विक्रम के चांद पर लैंड करते समय 2.06 टन मिट्टी उडी थी और चुनावी वायदों ने तो इससे भी अधिक मिट्टी मतदाताओं की आंखों में डालदी है अथवा डाल देंगे।

समय बदलता जा रहा है, अत: हमें भी अपने को बदलना होगा। जो समय के साथ नहीं चलेगा वह पीछे रह जावेगा। बगावत जोरों पर है। दोनों ही मुख्य पार्टियों यानी कांग्रेस व भाजपा को बगावत का खतरा सतारहा है। कुछ नगरों की स्थिति अजीब है। यहां निर्दलीय प्रत्याशी कांग्रेस को ही नुकसान पहुंचाता आया है। कई विधानसभा की सीटों पर यही हो रहा है। कहीं पुरानों पर ही बाजी लग रही है तो कहीं नये चेहरों पर किस्मत आजमाई जा रही है। चरित्र में ऐसा परिवर्तन आया है कि आदमी अपने को ही पहिचान नहीं कर पा रहा है।

भारत विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र है किन्तु नेतृत्वहीन दिखाई देता है। जो एक बार मुख्यमंत्री की गद्दी पर बैठ गया वह व्यक्ति कुर्सी से चिपक जाना चाहता है। फलस्वरूप राज्यों में सही नेतृत्व नहीं है। पांच राज्यों में विधान सभा के चुनाव होने जा रहे हैं किन्तु चुनाव में कौन खडा होगा इसकी फाइनल लिस्ट नहीं बन पाई है। सभी पार्टियों को सबसे बडा खतरा अपनों से है। मतदाताओं को लुभाने के लिये मुफ्त की रेवडियां बाँटने में राजनीतिक पार्टियां स्वर्ण पदक लेना चाहती हैं। उन वस्तुओं को लुटाया जा रहा है जो जनता की सम्पत्ति है। जनता पूछना चाहती है, "नेता जी यह तो बतलाओ आपको जनता की सम्पत्ति मुफ्त में देने का अधिकार किसने दिया"?

चुनाव आयोग ने आचार संहिता जारी की है। चुनाव आयोग के समक्ष आचार संहिता के केस लम्बित हैं। क्या उसे भंग करने वाले व्यक्तियों पर सारभूत कार्यवाही हुई है? वर्तमान में इस बाबत शिकायतें हो रही हैं, किन्तु शिकायतों पर क्या कार्यवाही की गई, यदि हुई हैं तो उसे जनहित में प्रकाशित किया जाना चाहिये।

इलेक्ट्रोरल बॉण्ड की वैधानिकता पर सुप्रीम कोर्ट दिनांक 31.10.2023 से सुनवाई प्रारम्भ कर चुकी है। केन्द्र सरकार का केस है कि चुनाव चंदे का स्रोत जानने का मूल अधिकार जनता को नहीं है। राजनैतिक पार्टियों (विपक्ष) का जवाब है कि कौन चंदा दे रहा है, इसका पता सरकार लगायेगी। सर्वोच्च न्यायालय में कई याचिकाओं पर यह प्रश्न उठाया गया है और न्यायालय से मांग की है कि राजनीतिक पार्टियों को सरकारी कार्यालय (स्टेट) माना जावे और उन्हें आरटीआई अधिनियम के तहत् लाया जावे।

चुनाव का माहौल गरमा रहा है। आचार संहिता का उल्लंघन हो रहा है। कुछ ही दिनों में 376 करोड की अवैध सम्पत्ति जब्त की जा चुकी है। महाराष्ट्र में आरक्षण की आग जोरों से फैल रही है। विधायकों व मंत्रियों के घरों को जला दिया है। इण्डिया गठबंधन का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यह गठबंधन 'स्टिल बॉर्न' ही रह गया प्रतीत होता है।

चुनावों के समय शांत वातावरण रहना चाहिये। भाईचारा रहे। आचार संहिता की पालना हो। चुनाव सभा के भाषण संयत हों उसमें अपमान जनक शब्दों का प्रयोग न हो तथा वे भडकाऊ भी न हो। हेट स्पीच से चुनाव के दौरान बचना ही भला है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता संविधान के अनुच्छेद 19 के अपवादों से प्रतिबंधित है। केन्द्र सरकार और भाजपा का दृष्टिकोण व विचार उचित व सही है, क्योंकि केन्द्र सरकार ने हमास की गतिविधियों को आतंकी गतिविधि की संज्ञा दी है।

यह लेख लिखने तक यानी दिनांक 1.11.2023 तक राजस्थान से चुनाव लडने वालो की अन्तिम लिस्ट तैयार नहीं थी। भाजपा व कांग्रेस के उम्मीदवार दल बदल रहे हैं अर्थात् बागी हुये हैं और बागियों की संख्या बढ रही है और जैसे जैसे चुनाव मतदान तक पहुँचेगा यह संख्या बढती जावेगी। जनता फाइनल रिजल्ट का इन्तजार करती रह जावेगी और मतदान ही हो जावेगा। सांभा, बागियों की अन्तिम लिस्ट नहीं दे पायेगा।

मतदाता तेरी जय हो!

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

मनोविज्ञान : मन और अप्रत्याशित धन

डॉ. रामावतार शर्मा

बेलफास्ट, आयरलैंड का रहने वाला पीटर लैवरी नामक बस ड्राइवर जब एक पब में दोस्तों के साथ बीयर पी रहा था तब उसे बताया गया कि उसने 10.2 मिलियन पाउंड स्टर्लिंग (104 करोड़ रूपए) की लॉटरी जीत ली है। यह बात 1996 की है जब विश्व में पाउंड स्टर्लिंग बहुत ही मजबूत मुद्रा हुआ करती थी। 34 वर्षीय लैवरी ने तीन दिन बाद अपनी नौकरी छोड़ दी और दस दोस्तों के साथ सेंट लूसिया द्वीप पर मौज मस्ती के लिए निकल पड़ा। वहां से आने के चंद दिनों बाद उसने 22 लोगों को साथ लिया और अमेरिका निकल पड़ा।

दोस्त, शराब, पार्टियां तथा खाना पीना ही पीटर की जिंदगी बन गया और वह दोनों हाथों से धन लुटाने लगा जिसमें कई तरह की कारों का काफिला भी था। इस विलासिता पूर्ण जीवनशैली के फलस्वरूप अपने 40वें जन्मदिन पर वह अतिगंभीर रूप से बीमार हो मृत्यु के पास पहुंचने लगा। मौत को सामने देख पीटर को होश आया। उसने शराब की बोतलें दोस्तों में बांट दी। एक मर्सिडीज को छोड़ बाकी सारी कारें बेच दी। डिस्टलरी का व्यापार प्रारंभ किया और आयरिश लोगों के हितार्थ जन कल्याण ट्रस्ट स्थापित किया जहां छाती, हृदय और मस्तिष्क संबंधित रोगों के इलाज की रियायती व्यवस्था है।

उसने तय किया कि अपना व्यापार का वह इस तरह विस्तार करेगा जिसमें अधिक से अधिक गरीब आयरिश लोगों को रोजगार मिले। आज पीटर लैवरी 60 वर्ष के पार एक स्वस्थ उद्यमी है। अपना व्यापार अपने निकटस्थ लोगों को सौंप कर अपनी पत्नी के साथ अपना समय समाज उत्थान में लगा रहा है। चूंकि इस दंपती के कोई संतान नहीं है तो दोनों ने आयरलैंड को ही अपनी संतान मान अपनी पूर्ण संपत्ति जनहित में लगाने का निर्णय लिया है जिसके कारण लोग उन्हें 'स्पिरिट ऑफ बेलफास्ट' यानि 'बेलफास्ट की आत्मा' कहते हैं। अप्रत्याशित धन वर्षा का मानव मन पर पड़नेवाले प्रभाव का पीटर लैवरी एक आदर्श उदाहरण हो सकते हैं जहां सर्व प्रथम व्यक्ति अपने दबी हुई हसरतों के पीछे अंधी दौड़ लगाता है, कर्म को त्याग कर भोग विलास में डूब जाता है जिसके फलस्वरूप वह या तो फिर से दरिद्रता में लौट आता है या असामयिक मृत्यु का शिकार हो जाता है परंतु पीटर जैसे कुछ लोगों की कुंडलिनी जागृत हो जाती है, उन्हें होश आ जाता है और वे समाज की आत्मा बन जाते हैं।

2018 में अमेरिका के राष्ट्रीय आर्थिक अनुसंधान ब्यूरो ने एक अध्ययन का प्रकाशन किया जिसमें स्वीडन के तीन हजार से भी ज्यादा लोगों के जीवन का विश्लेषण किया जिन्होंने लॉटरी द्वारा बड़ा धन प्राप्त किया। स्वीडिश लोगों ने अपनी धन प्राप्ति को बड़े सामान्य तरीके से स्वीकार किया। वे लोग अपना नियमित कामकाज करते रहे हालांकि अधिकतर लोगों ने कार्य समय में कटौती कर दी। जब इन विभिन्न लोट्टो विजेताओं से पूछा गया कि इतने बड़े धन की प्राप्ति के बाद भी वे काम क्यों कर रहे हैं और विलासिता का जीवन क्यों नहीं जी रहे हैं। इन लोगों के अनुसार विलासिता मुद्रास्फीति को जन्म देती है और बड़ा धन यकायक कम होने की क्षमता रखता है इसलिए वे एक संतुलित तथा आर्थिक रूप से सुरक्षित जीवन अधिक पसंद करते हैं।

सामान्य मनोविज्ञान के अनुसार अप्रत्याशित धन आते ही लोग कारें खरीद लेते हैं, बड़ा मकान बना लेते हैं और शानदार वैवाहिक सम्मेलन कर धन फूंक देते हैं। वे समाज के अन्य लोगों और अपने रिश्तेदारों को अचंभित करनेवाले समारोह आयोजित कर इस धन का एक बड़ा हिस्सा व्यय कर देते हैं। चूंकि इस धन का स्त्रोत एक-बारगी होता है तो इसकी पुन: पूर्ति नहीं हो सकती है। दुनिया के अधिकतर हिस्सों में लॉटरी का धन लोगों का स्थाई रूप से संपन्न नहीं बनाता है और विजेताओं के परिवार में किसने ही अवगुण उत्पन्न कर समाप्त हो जाता है। यही कारण है कि लॉटरी की कमाई को सम्मानित दृष्टि से नहीं देखा जाता है। स्वीडन में हालांकि लोट्टो को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है क्योंकि विजेता व्यक्ति अधिकतर मामलों में अपने इस धन को किसी निवेश या व्यापार में लगाता है जो समाजोपयोगी कृत है जिसके फलस्वरूप देश के विकास को गति मिलती है।

धन मुद्रा एक चलायमान प्रवृति रखती है। घर पर पड़ी मुद्रा का ह्रास होता रहता है, उधार दी हुई मुद्रा का वापस आना अनिश्चित है और निवेशित मुद्रा में घाटे की संभावनाएं छुपी होती हैं। आज के रुपए को ध्यान से देखें तो पाएंगे कि वह मात्र एक प्रॉमिसरी नोट है, सरकार का एक वादा है और वादों पर विश्वास आपका व्यक्तिगत निर्णय है। सोने चांदी के सिक्कों की नोटबंदी संभव नहीं है परंतु कागज के टुकड़े पर वैश्विक अंधा भरोसा मनोविज्ञान के अनुसार एक अजूबा ही है। यहां आवश्यकताओं के पार अत्यधिक नोटों की बोरियां भरनेवालों को एक तथ्य के बारे में हमेशा याद रखना चाहिए– **कमला थिर ना कहीं रहीम, जानत सब जग कोय पुरुष पुरातन की वधु, क्यों न चंचला होय॥**

जिस तरह से वृद्ध पुरुष की युवा वधु चंचल होती है उसी तरह से चिर यौवना कमला यानि लक्ष्मी भी कभी एक ही जगह टिकती नहीं है, ऐसा रहीम के अनुसार सारा जग जानता है।

कागज की मुद्रा कमाइए और अपनी सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद समाजोपयोगी कार्यों में व्यय कीजिए। कार्य भी ऐसे जो लंबे समयकाल तक उपयोगी रहें। अल्पकालीन और अहंकार को तुष्ट करने वाले कार्य अंतत: प्रभावहीन हो जाते हैं और आत्म संतुष्टि के जनक नहीं हो सकते हैं।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

राय: वैश्विक संकटों के लिए कुत्तों को दोष देना गलत है

मरियम अबु हैदेरी

वरिष्ठ लेखक डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा, जिन्होंने दुनिया भर में कथित तौर पर 50,000 मौतों के लिए कुत्तों को जिम्मेदार ठहराया है, के एक हालिया लेख के जवाब में, मुझे उनके लेख में प्रस्तुत अशुद्धियों और गलतफहमियों को संबोधित करना आवश्यक लगता है। हालांकि मैं डॉ. शर्मा के दृष्टिकोण का सम्मान करती हूं, लेकिन तथ्यों की जांच करना और मौजूदा मुद्दे पर अधिक जानकारीपूर्ण दृष्टिकोण पर विचार करना महत्वपूर्ण है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, आइए स्वीकार करें कि वैश्विक कुत्तों की आबादी की गणना करना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि इसके लिए प्रत्येक कुत्ते को टैग करने और ट्रैक करने की आवश्यकता होगी – एक ऐसा कार्य जो वास्तविकता से बहुत दूर है। इसके अलावा, पराग देसाई का मामला, जिसे डॉ. शर्मा ने कुत्ते से संबंधित मौत के रूप में उजागर किया था, का व्यापक रूप से खंडन किया गया है। प्रारंभिक मीडिया रिपोर्टों का खंडन करते हुए, शेल्बी अस्पताल की मेडिकल रिपोर्ट में उन पर काटने का कोई निशान नहीं पाया गया। दोषारोपण करने से पहले सटीक जानकारी पर भरोसा करना महत्वपूर्ण है।

हमारे समाज में, विशेष रूप से जयपुर में मेरे 3.5 वर्षों के दौरान, जो बात मुझे चिंताजनक लगती है, वह है आसान लक्ष्यों पर दोष मढने की प्रवृत्ति। इस संदर्भ में, कुत्ते कूड़े, कचरा और कार क्षति जैसे मुद्दों के लिए बलि का बकरा बन जाते हैं। इन जानवरों पर दोष मढ़ने के बजाय, जो इस मामले में निर्दोष हैं, हमें व्यवस्थित और मानवीय पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) और एंटी-रेबीज टीकाकरण (एआरवी) कार्यक्रमों को लागू करने के लिए स्थानीय अधिकारियों को जवाबदेह बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

जयपुर में, हमने एक उचित एबीसी कार्यक्रम स्थापित करने के लिए संघर्ष किया है, और राज्य पशु कल्याण बोर्ड का राज्यव्यापी प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए बजट और कार्रवाई अपर्याप्त है। जयपुर में नसबंदी कार्यक्रम की देखरेख के लिए जो समितियां बनाई गई हैं, वे शायद वहां नहीं हैं, क्योंकि कई सदस्य केवल प्रतिष्ठा के लिए इन पदों पर बैठे हैं और निष्क्रिय हैं। जिन मुद्दों को सक्षम शासन द्वारा हल किया जाना चाहिए, उनके लिए कुत्तों पर दोष मढा जाना निराशाजनक है।

2023 एबीसी नियमों ने नसबंदी सहित सामुदायिक पशु देखभाल की जिम्मेदारी रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए), नगर निगम और नगर पालिकाओं को स्थानांतरित कर दी है। फिर भी, इन कार्यक्रमों में प्रभावी शासन और सक्रिय भागीदारी की मांग करने की तुलना में जानवरों को दोष देना आसान लगता है। इसके अलावा, हाल की वैश्विक सफलता की कहानियां, जैसे कि भूटान ने खुद को अपनी पूरी आवारा कुत्तों की आबादी की नसबंदी और टीकाकरण करने वाला पहला देश घोषित किया है। तो, हमें भारत में इसी तरह के कार्यक्रम लागू करने से कौन रोक रहा है? इसका उत्तर निष्पक्ष और अक्षम व्यक्तियों को महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नियुक्त करने में निहित है। हमने नेतृत्व परिवर्तन और लगातार प्रतिबद्धता की कमी के कारण स्थानीय निकायों की विफलता देखी है।

निष्पक्षता में, डॉ. शर्मा वाहनों पर कुत्तों के भौंकने और पालतू कुत्तों को बिना पट्टे के घूमने की अनुमति के बारे में वैध बिंदु उठाते हैं। हालाँकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि इन दोनों परिदृश्यों में, दोष स्वयं कुत्तों पर नहीं डाला जाना चाहिए। कुत्ते अक्सर पिछली घटनाओं के कारण हुए आघात के कारण वाहनों पर प्रतिक्रिया करते हैं, जैसे कि अपने पिल्लों को तेज रफ्तार वाहनों से कुचलते हुए देखना-एक हृदयविदारक अनुभव जो एक स्थायी प्रभाव छोड़ता है। व्यक्तिगत अवलोकन के रूप में, मैंने पाया है कि कुत्ते वाहनों के पीछे शायद ही कभी भौंकते हैं जब वाहन में शांत और दयालु उपस्थिति होती है। पालतू कुत्तों को खुले में घूमने की अनुमति देने के मामले में जिम्मेदारी पालतू माता-पिता की है। यह चिंताजनक है कि कई पालतू पशु मालिकों को टीकाकरण सहित अपने पालतू जानवरों की आवश्यक देखभाल आवश्यकताओं के बारे में पर्याप्त रूप से शिक्षित नहीं किया गया है। ज्ञान की इस कमी का श्रेय बेईमान प्रजनकों और कुत्ते व्यापारियों को दिया जा सकता है जो जानवरों की भलाई पर लाभ को प्राथमिकता देते हैं। ये विक्रेता अक्सर नए पालतू माता-पिता को पालतू पशु स्वामित्व के साथ आने वाली जिम्मेदारियों के बारे में शिक्षित करने में विफल रहते हैं। इसलिए, जब हम इन स्थितियों की बारीकी से जांच करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य परिणामों में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं – चाहे पालतू पशु मालिक हों, प्रजनक हों, या ऐसे व्यक्ति हों जो कुत्तों के आसपास देखभाल और सावधानी बरतने में विफल रहते हैं। इसलिए, यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत है कि मनुष्य, कुत्ते नहीं, मौजूदा मुद्दों के लिए अंतिम ज़िम्मेदारी लेते हैं। और हमारा ध्यान हमारे निर्वाचित मंत्रियों, नियुक्त अधिकारियों और संबंधित निकायों को दीर्घकालिक, प्रभावी कार्यक्रमों के लिए प्रतिबद्ध करते हुए जवाबदेह बनाने पर होना चाहिए जो जानवरों और मनुष्यों दोनों को लाभ पहुंचाते हैं। कुत्तों को दोष देना कोई समाधान नहीं है; यह हमारे सामने आने वाली वास्तविक चुनौतियों से ध्यान भटकाने का काम करता है। अब समय आ गया है कि हम अपने समुदायों के भीतर पशु कल्याण और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए पहल करने के लिए समर्पित और सक्रिय व्यक्तियों को नियुक्त करें। इसके अलावा, इंसान होने के नाते हमारे लिए कार्रवाई करना और अपने समुदायों में कुत्तों के लिए व्यवस्थित और मानवीय नसबंदी कार्यक्रम लागू करना महत्वपूर्ण है। ऐसे उपायों के बिना, कुत्ते का काटना जारी रहेगा, और हम कुत्तों को दोष नहीं दे सकते हैं जब समाधान हमारी समझ में हैं लेकिन ध्यान नहीं दिया गया है।

–मरियम अबुहैदेरी

संगीत, कला और संस्कृति का "मोमासर उत्सव" आज से

जयपुर। ना कोई स्टेज, ना विशेष लाइटिंग और ना ही कोई ताम तमाशा। हवेली चौक और खुले मैदान में नामी कलाकारों की प्रस्तुतियां, लोक वाद्यों की धुन और दुर्लभ लोक संगीत। कुछ ऐसा होता है राजस्थान का सबसे बड़ा कल्चरल फेस्टिवल "मोमासर उत्सव"। यह एक ऐसा अनूठा कार्यक्रम है जिसमें कोई मुख्य अतिथि नहीं होता, कोई फीता काटना या दीप प्रज्जवलन नहीं होता। यहां दर्शक दरी पर बैठकर दुर्लभ संगीत का आनंद लेते हैं, उन्हें कला को करीब से देखने और कलाकारों से रूबरू होने का अवसर मिलता है। ऐसे आयोजन बहुत कम देखने को मिलते हैं। बीकानेर जिले का मोमासर कस्बा 3 से 5 नवंबर तक इस ऐतिहासिक आयोजन का गवाह बनेगा, जिसमें लोक कलाओं को सहेजने वाले 200 से ज़्यादा कलाकार अपनी मधुर प्रस्तुतियों से समां बांधेंगे। आयोजन में अनेक दस्तकार व शिल्पकार भी अपनी हस्तकलाओं का प्रदर्शन करेंगे।

बीकानेर जिले का मोमासर कस्बे में दर्शक दरी पर बैठकर दुर्लभ संगीत का आनंद लेते हैं।

इस बार मोमासर उत्सव का आयोजन अनेक मायनों में खास है। दर्शकों को इस बार खास तौर पर साउथ अमेरिकन और राजस्थानी गीत-संगीत की जुगलबंदी देखने को मिलेगी। मोमासर में पहली बार आयोजित हो रही 'धुंधलाती धुनें' प्रदर्शनी में दर्शक लोक वाद्य यंत्र बनाने की लुप्तप्राय: कला और दुर्लभ संगीत परम्पराओं से रूबरू होंगे।

इन तीन दिनों में दर्शकों को भक्ति संगीत, अलगोज़ा वादन, जोगिया सारंगी वादन, मांगणियार व कालबेलिया गीत-संगीत, पाबूजी के गीत, महिला कलाकारों द्वारा सितार वादन, मंजीरा-घूमर-चंग व ढोल-थाली नृत्य और इटली व चिली के कलाकारों की प्रस्तुतियाँ देखने को मिलेंगी। इसके अलावा हाट बाज़ार व मोमासर मेला भी आकर्षण का केंद्र होगा। देश-दुनिया से पधारे करीब 10,000 लोगों के इस कार्यक्रम में शामिल होने की संभावना है। कार्यक्रम का मुख्य आयोजन स्थल मोमासर स्थित श्रीजयचंद लाल पटावरी की हवेली और श्री कानीराम बुद्धमल पटावरी की हवेली हैं। इसके अलावा गांव देवता भोमिया जी का मंदिर, मोमासर ताल मैदान और द सैंड्स (कुनाल-कनिका फार्म) इस उत्सव के अन्य आयोजन स्थल हैं। सुरवि चैरिटेबल ट्रस्ट के रवि बोरड़ ने बताया कि कस्बे के निवासियों को इस आयोजन का इंतज़ार साल भर से रहता है। कस्बे के जो निवासी कहीं और जाकर बस गए हैं वो भी इस आयोजन ज़रूर शामिल होते हैं। यह आयोजन सिर्फ दूर बैठकर ताली बजाने तक ही सीमित नहीं है, यहाँ देश-दुनिया से आये लोगों को विभिन्न कलाओं को करीब से देखने और समझने का अवसर मिलता है।

जाजम फाउंडेशन के विनोद जोशी ने बताया कि मोमासर उत्सव का इस बार यह 11वां संस्करण है। यह उत्सव राजस्थान की संस्कृति, अद्भुत कला और दुर्लभ लोक संगीत को बरसों से सहेजता आ रहा है। यह राजस्थान का एकमात्र ऐसा आयोजन है जिसमें इतने बड़े स्तर पर समुदाय और आमजन की सहभागितारहती है।

गौरतलब है कि मोमासर उत्सव का आयोजन 'जाजम फाउंडेशन' के द्वारा किया जाता है। इसके मुख्य प्रायोजक सुरवि चैरिटेबल ट्रस्ट है। इसके सह-प्रायोजक संचेती ग्रुप हैं। नागपाल इवेंट्स-जयपुर, विश-मेकर्स-दिल्ली, लोक-धुनी फाउंडेशन, डांसिंग पिकॉक और मर्करी कम्यूनिकेशन इस उत्सव के आयोजन सहयोग है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 3 नवम्बर, 2023

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2080, पुनर्वसु नक्षत्र शुक्रवार प्रात: 7:57 तक, सिद्ध योग दिन 12:32 तक, गर करण दिन 10:30 तक, चन्द्रमा रात्रि 1:24 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरू-मेष, शुक्र-कन्या, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज कुमार योग सूर्योदय से रात्रि 11:08 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। शुक्र कन्या रात्रि प्रात: 5:13 पर प्रवेश करेगा। भद्रा रात्रि 11:08 से शनिवार दिन 12:04 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:04 तक, लाभ-अमृत 8:04 से 10:48 तक, शुभ 12:14 से 1:33 तक, चर 4:17 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:41, सूर्यास्त 5:39

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिचितों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मकर
स्वास्थ्य में सुधार होगा। मन में बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।